दक्ष®

10 अगस्त 2022 को जारी नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर द्वारा आयोजित

A Complete Book for

REET Mains Exam.

No. 1

Grade-3rd

Level-2

(कक्षा 6 से 8)

अध्यापक सीधी भर्ती

हिन्दी

संबंधित विद्यालय विषय का ज्ञान एवं शैक्षणिक रीति विज्ञान

अत्यन्त महत्त्वपूर्ण 140 अंक सुनिश्चित करें

For Section-III • Marks-120 ● For Section-IV • Marks-20

Special Features

- संधि, समास, उपसर्ग, शब्द शक्ति, सर्वनाम, अव्यय, विशेषण व प्रत्यय की महत्वपूर्ण तालिकाएँ
- गद्य, पद्य, व्याकरण व रचना शिक्षण की महत्वपूर्ण विधियाँ
- गत वर्षों की परीक्षाओं में पूछे गए लगभग 80 % प्रश्न इस गाइड पर आधारित

Buy Online at : WWW.DAKSHBOOKS.COM

संदीप मालाकार ● गणेश प्रजापत

4. क्रिया

क्रिया

वे शब्द, जिनके द्वारा किसी कार्य का करना या होना पाया जाता है उन्हें क्रिया कहते हैं। वाक्य में जिस शब्द या शब्द समूह के प्रयोग से किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान के बारे में कुछ विधान किया जाता है, वह क्रिया ही है। क्रिया का अर्थ होता है काम का करना या होना। क्रिया वाक्य का आवश्यक अंग है, इसे विधेय कहा जाता है। जैसे—पीसना, पढ़ना, सोना, फिरना आदि।

क्रिया के भेद—क्रिया को कर्म, काल, रचना, अर्थ आदि के आधार पर अनेक रूपों में विभाजित किया जाता है। क्रिया के ये भेद इस प्रकार है—

(1) सकर्मक क्रिया, **(2) अकर्मक क्रिया,**
(3) प्रेरणार्थक क्रिया, **(4) द्विविधि क्रिया,**
(5) द्विकर्मक क्रिया, **(6) अनेकार्थक क्रिया,**
(7) सहायक क्रिया, **(8) संयुक्त क्रिया,**
(9) पूर्वकालिक क्रिया, **(10) नामधातु क्रिया आदि।**

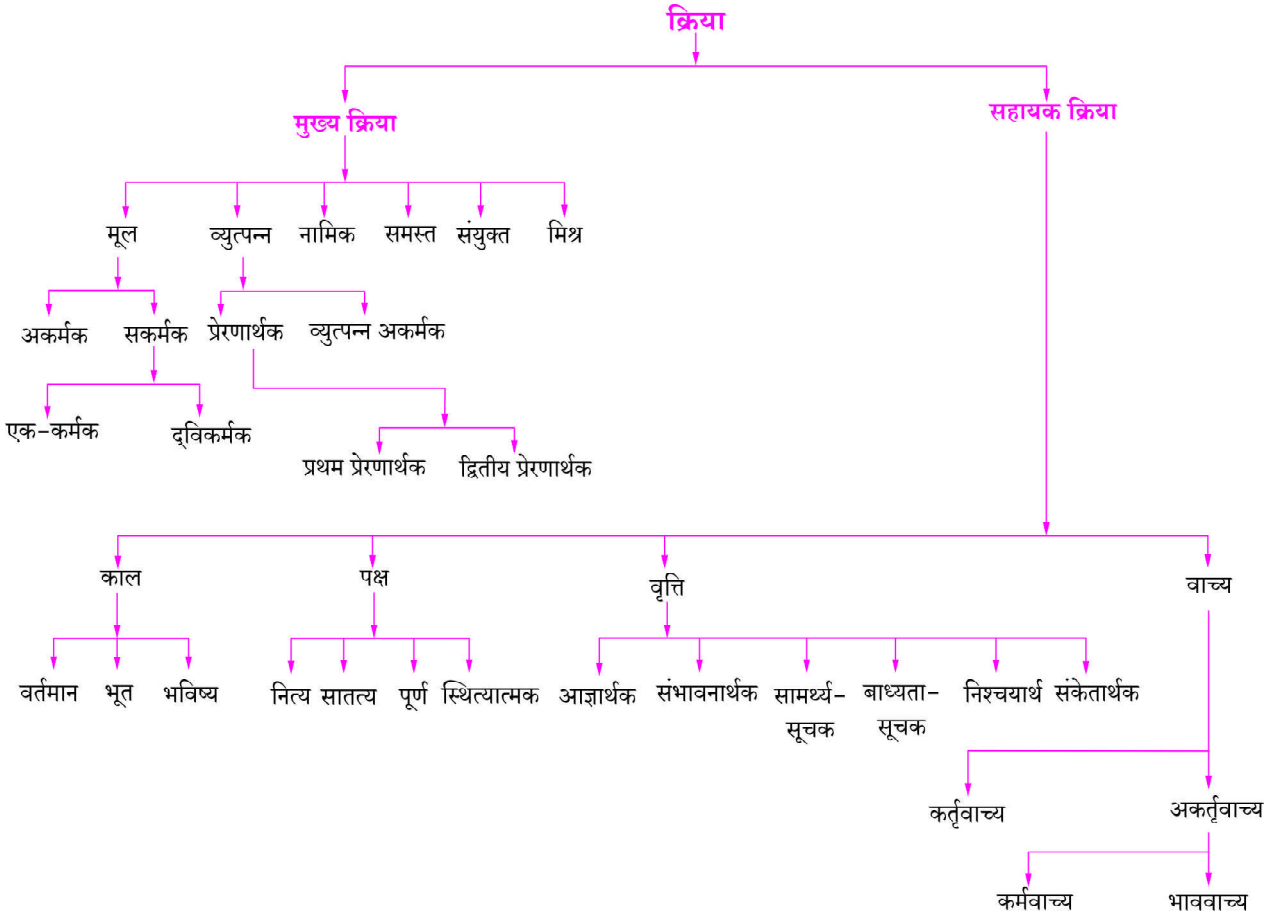

(1) सकर्मक क्रिया

जिस क्रिया का फल कर्त्ता पर न पड़ कर कर्म पर पड़े, वह क्रिया सकर्मक क्रिया होती है। जैसे—

राधा खाना **पकाती** है। सुरभि ढोलक **बजाती** है।
राजू चित्र **बनाता** है। मोहन पान **खाता** है।

ये सभी क्रियाएँ सकर्मक हैं सकर्मक क्रियाओं के लिए निम्न 3 बातें आवश्यक है।

(1) कर्म का उपस्थित होना (2) कर्म के बिना भाव स्पष्ट न होना तथा (3) 'क्या' प्रश्न (काल्पनिक) करके उसके उत्तर रूप में कर्म की प्राप्ति। जैसे—मोहन बंशी बजाता है।

बजाता क्रिया का फल कर्म (बंशी) पर है। यहाँ कर्म उपस्थित है। बिना कर्म के ही क्रिया का भाव स्पष्ट नहीं होगा, अतः यह सकर्मक क्रिया है। इसी प्रकार—

मोहन पान **खाता** है।

वाक्य में पान (कर्म) उपस्थित है तथा क्या खाता है? (काल्पनिक प्रश्न का उत्तर भी प्राप्त होता है।) पान। यदि कर्म 'पान' को हटा दिया जाए तो "मोहन **खाता** है।" से अर्थ स्पष्ट नहीं होता है अतः यहाँ खाता सकर्मक क्रिया है। अन्य उदाहरण—

चोर ने भेड़ **चुरायी**। (क्या **चुरायी**?)

सकर्मक क्रिया के निम्न 3 भेद होते हैं—

1. एककर्मक सकर्मक क्रिया—जहाँ क्रिया के साथ एक कर्म प्रयुक्त हो। जैसे—सिपाही चोर को पकड़ता है।

5. अव्यय

'अव्यय' का शाब्दिक अर्थ है—'जो व्यय न हो'। **अविकारी का अर्थ** है—जिसमें विकार या परिवर्तन न आए। अत: ऐसे शब्द जिनके रूप में लिंग, वचन, कारक, काल, पुरुष आदि के कारण कोई परिवर्तन नहीं आता, जो सदा अपने मूल रूप में बने रहते हैं, उन्हें **अव्यय** या **अविकारी** शब्द कहते हैं। हिन्दी में चार प्रकार के अविकारी शब्द पाए जाते हैं—

1. क्रियाविशेषण
2. संबंधबोधक
3. समुच्चयबोधक
4. विस्मयादिबोधक

ध्यातव्य है कि वाक्य का कर्ता चाहे पुल्लिंग हो या स्त्रीलिंग,चाहे एकवचन हो या बहुवचन, चाहे जड़ हो या चेतन, ये चारों शब्द बिना परिवर्तन के ही प्रयुक्त होते हैं। जैसे—जब, तब, अभी, उधर, वहाँ, अरे, वाह, किन्तु, परन्तु, एवं, इसलिए, अतएव आदि।

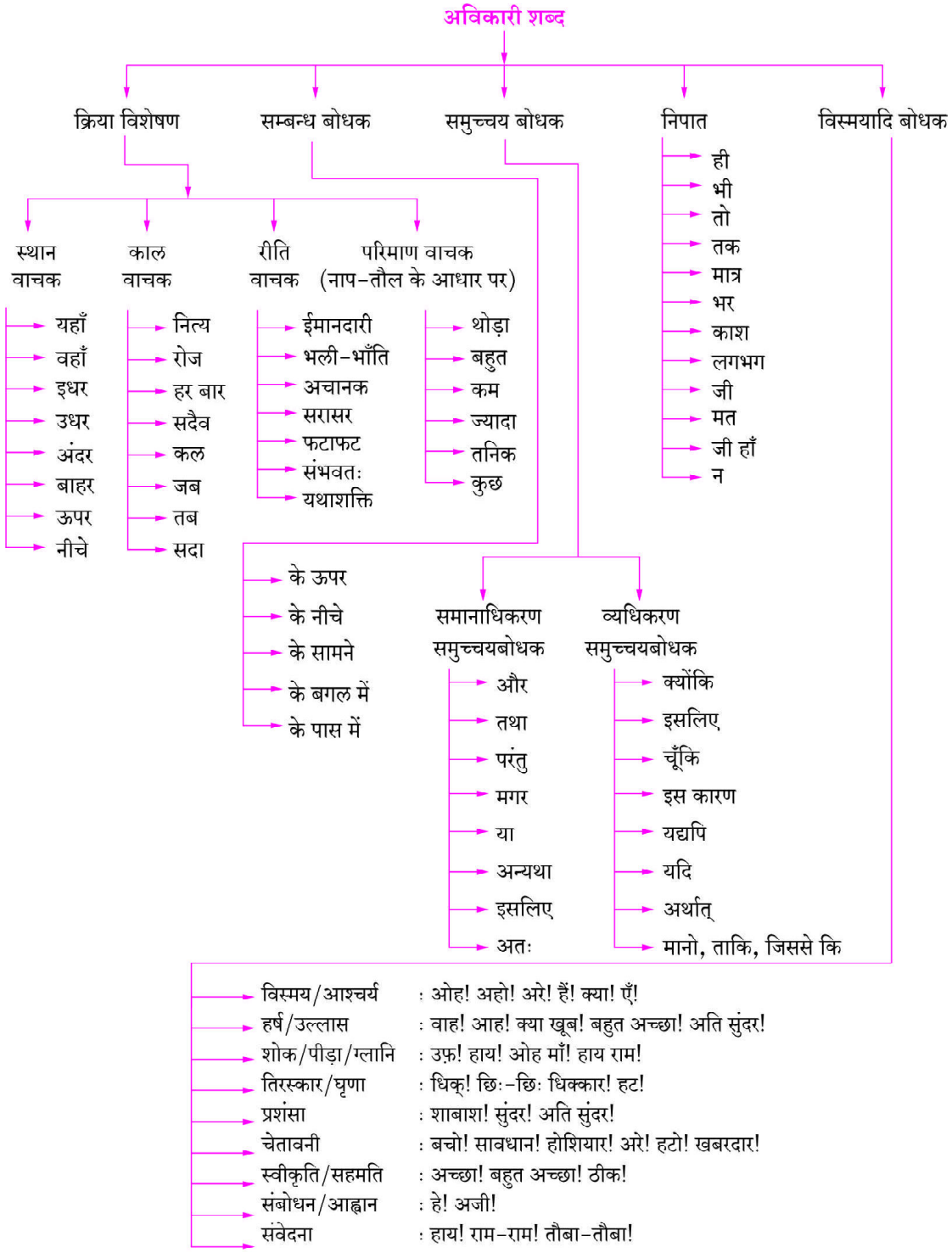

3. 'ज' प्रत्ययांत संज्ञाएँ, जैसे—जलज, पंकज, नीरज, पिंडल, स्वेदज।
4. 'आर', 'आय' तथा 'आस' अंत वाले शब्द, जैसे— विस्तार, प्रचार, प्रसार, संसार, उपाय, अध्याय, समुदाय, विलास, उल्लास, हास।
5. 'त्य', 'त्व', 'व', 'र्य' अंत वाली भाववाचक संज्ञाएँ, जैसे— नृत्य, कृत्य, भृत्य, लाघव, गौरव, वैभव, माधुर्य, सौन्दर्य, धैर्य, स्थैर्य।
6. 'अ' प्रत्ययांत संज्ञाएँ, जैसे—काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ, क्षोभ, त्याग, दोष।
7. 'त' अंत वाले शब्द, जैसे—सुख, दुःख, लेख, शंख, नख, मख।

संस्कृत के स्त्रीलिंग शब्द

1. आकारांत संज्ञाएँ—लता, माया, कृपा, अनुकम्पा, दया, क्षमा, लज्जा, शोभा, सभा।
2. नाकारांत संज्ञाएँ—रचना, घटना, प्रार्थना, वेदना, प्रस्तावना।
3. उकारांत संज्ञाएँ—मृत्यु, वस्तु, रज्जु, वायु, ऋतु, रेणु, धातु। अपवाद अश्रु, मरु, हेतु, सेतु। (ये पुल्लिंग शब्द हैं)।
4. 'ति' तथा 'नि' अंत वाले शब्द—गति, मति, रीति, जाति, हानि, ग्लानि, योनि।
5. इकारांत संज्ञाएँ—राशि, निधि, ऋद्धि, सिद्धि, विधि, परिधि, रुचि, छबि, केलि। अपवाद वारि, पाणि, जलधि, गिरि। ये पुंल्लिंग हैं।
6. 'ता' प्रत्ययांत वाली भाववाचक संज्ञाएँ—सुंदरता, कोमलता, मधुरता, कठोरता, नम्रता, प्रभुता।
7. 'इमा' प्रत्ययांत वाले शब्द—गरिमा, महिमा, लघिमा, मधुरिमा, लालिमा, हरीतिमा, कालिमा, नीलिमा।

हिन्दी में प्रयुक्त उर्दू के पुल्लिंग शब्द

1. 'आब' अंत वाले शब्द—हिसाब, जवाब, गुलाब, कवाब, आफताब। अपवाद शराब, किताब, मिहराब, ताब।
2. 'आर' तथा 'आन' अंत वाले शब्द—इकरार, बाजार, इनकार, इश्तिहार, मकान, इम्तिहान, आसान। अपवाद सरकार, तकदार, दुकान।
3. 'ह' अंत वाले शब्द जो हिन्दी में 'आ' बन कर अंत्य स्वर में मिल जाता है। जैसे परदा, चश्मा, किस्सा, गुस्सा, तमगा, राता। अपवाद दफा।

उर्दू के स्त्रीलिंग शब्द

1. ईकारांत भाववाचक संज्ञाएँ—सरदी, गरमी, बीमारी, गरीबी, अमीरी, तैयारी, चालाकी, नवाबी।
2. अकारांत संज्ञाएँ—कोशिश, नालिश, बारिश, तलाश, मालिश। अपवाद होश, हवास, ताश।
3. आकारांत संज्ञाएँ—दवा, हवा, सजा, खता, जमा, दुनिया।
4. तकारांत संज्ञाएँ—दौलत, अदालत, कसरत, कीमत, हजामत, करामात, मुलाकात।
5. हकारांत संज्ञाएँ—सुबह, तरह, सुलह, सलाह, परवाह, आह। अपवाद माह, गुनाह।

हिन्दी में प्रयुक्त अंग्रेजी शब्दों के लिंग

पुल्लिंग शब्द—कोट, बूट, लैंप, सोडा, कैमरा, डेल्टा, स्टेशन, नंबर, लेक्चर, वारंट, बटन, रेडियो, पैन आदि।

स्त्रीलिंग शब्द—कंपनी, कमेटी, फीस, चेन, चिमनी, डिक्शनरी, लाइब्रेरी, म्युनिसिपैल्टी, हिस्ट्री, गिनी, अपील, फिल्म, पेंसिल, मोटर।

लिंग की पहचान सम्बन्धी तालिका

क्र.सं.	विवरण	उदाहरण	अपवाद
1.	प्राणिवाचक पुल्लिंग संज्ञायें	आदमी, उल्लू, कबूतर, कुत्ता, केंचुआ, कौआ, कछुआ, खरगोश, खटमल, खग, गैंडा, गिद्ध, गिरगिट, गरुड़, घोड़ा, चमगादड़, चीता, जुगनु, तीतर, तोता, नीलकंठ, पक्षी, बंदर, बैल, बाज, बिच्छू, भालू, मगरमच्छ, मोर, रीछ आदि।	कोयल, गिलहरी, चील, जूँ, चींटी, छिपकली, दीमक, मछली, मकड़ी।
2.	पर्वतों के नाम	हिमालय, अरावली, विंध्याचल, सतपुड़ा, कैलाश, यूराल, आल्पस।	
3.	महीनों के नाम	भारतीय महीने जैसे चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, क्वार, कार्तिक, अगहन, पौष, माघ, फाल्गुन तथा अंग्रेजी महीनों के नाम यथा जनवरी, फरवरी, मार्च, अप्रेल, मई, जून, जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर, नवम्बर एवं दिसम्बर।	
4.	दिन के नाम	सोमवार, मंगलवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार, रविवार	
5.	देशों के नाम	भारत, चीन, जापान, रूस, अमेरिका, ब्रिटेन, सऊदी अरब, ईरान, इराक	श्रीलंका
6.	ग्रहों के नाम	सूर्य, चंद्रमा, बुध, शुक्र, मंगल, राहु, केतु, अरुण, वरुण	पृथ्वी
7.	रत्न व धातु के नाम	हीरा, पुखराज, नीलम, मूँगा, सोना, पीतल, लोहा	चाँदी

क्र.सं.	विवरण	उदाहरण	अपवाद
8.	द्रवों के नाम	दूध, शर्बत, बूरा, गुड़, आटा, साबुन, नमक, तेल, घी, बेसन, शर्बत, काढ़ा, अर्क, इत्र, रायता, मक्खन	चीनी, मैदा, सूजी, चाय, स्थायी, शराब/ लस्सी, ठंडाई
9.	वृक्षों व फलों के नाम	वृक्ष पीपल, आम, बरगद, नीम, बबूल, अशोक, चीड़, बड़, देवदारू, शीशम, सागौन, फल आम, कटहल, अमरूद, शरीफा, नीबू, सेब, आलू बुखारा, संतरा, केला, नारियल, तरबूज, पपीता, खजूर, बेर, बैंगन, टमाटर, अदरक, धनिया, खीर, करेला, कद्दू	इमली, खेजड़ी, लीची, नाशपाती, नारंगी, ककड़ी, जामुन
10.	अनाजों के नाम	गेहूँ, चावल, चना, ज्वार, बाजरा, मटर, तिल	मूँग, मोठ, ज्वार, मकई, मक्का
11.	समय सूचक नाम	सैकिण्ड, मिनट, घंटा, दिन, सप्ताह, पक्ष, माह, वर्ष	रात, सायं, संध्या, दोपहर, सुबह, शताब्दी
12.	समुद्रों के नाम	हिन्द महासागर, भूमध्य महासागर, प्रशान्त महासागर, आर्कटिक महासागर, अंटार्कटिका महासागर	बंगाल की खाड़ी, अरब सागर की खाड़ी
13.	शरीर के विभिन्न अंगों के नाम	कान, मुँह, दाँत, होठ, हाथ-पाव, गाल, मस्तक, तालू, बाल, अंगूठा, नाखून, मुक्का, नथना, घुटना, पेट	आँख, नाक, जीभ, खाल, अंगुली, बाँह, नस, हड्डी, कांख, कलाई, कोहनी, जांघ, पीठ, कमर, कलाई, गर्दन
14.	देवताओं के नाम	ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इन्द्र, यम, वरुण	
15.	अत में त्र हो	**मित्र** आया है। **चित्र** बनाया है। **नेत्र** फूट गया। **चरित्र** अच्छा है।	
16.	अंत में न हो	वचन निभाया। पालन किया। गमन किया। अनुमान, धन, वचन, यवन, व्याख्यान, अनुमान, अवमान, चंदन।	पवन
17.	अंत में ण हो	व्याकरण, पोषण, कल्याण, परिमाण, संस्करण, प्रांगण, प्रशिक्षण	
18.	अंत में ज हो	साँप अण्डज है। जलज जहाज, ब्याज	खोज, लाज, खीज
19.	अंत में त्व हो	सतीत्व, कृतत्व, अपनत्व	
20.	अत में त्य हो	कृत्य, नृत्य	
21.	अंत में व हो	गौरव, लाघव, राघव	
22.	अंत में य हो	माधुर्य, कार्य, न्याय, वाणिज्य	
23.	अंत में आर हो	बिहार, प्रचार, प्रसार, प्रकार, संचार, बिहार, उपहार, तुषार	हार, पुकार, जय जयकार
24.	अंत में आय हो	समुदाय, उपाय, व्यवसाय, अध्याय	सहाय, आय
25.	अंत में आस हो	विकास, उल्लास	
26.	अत में अ हो	त्याग, पाक, कलश, अंचल	जय, विनय
27.	अंत में त हो	गीत, मीत, चरित	बात, बरात
28.	अंत में ख हो	नख, मुख, सुख, दुःख	भीख, सीख, भूख
29.	भौगोलिक नाम	नगर, देश, रेगिस्तान, द्वीप, पर्वत, समुद्र, आकाश, सरोवर, पाताल, वायुमण्डल, पठार, भूकम्प, भूस्खलन, तूफान	झील, बावड़ी, नदी, नहर, पृथ्वी, घाटी, चोटी, वर्षा, धूप।

3. यदि त् के बाद च, ज, ट, ल, ड हों तो त् उन्हीं वर्ण में बदल जाता है। इसे निम्न तालिका से स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है।

क्र.	नियम	उदाहरण
1.	त्+च=त् के स्थान पर च्	उत्+चारण=उच्चारण, शरत्+चन्द्र=शरच्चन्द्र, सत्+चित्+आनन्द=सच्चिदानन्द।
2.	त्+ज्=त् के स्थान पर ज्	सत्+जन=सज्जन, उत्+ज्वल=उज्ज्वल, जगत्+जननी=जगज्जननी, विपत्+जाल = विपज्जाल, उत्+जयिनी = उज्जयिनी, यावत्+जीवन = यावज्जीवन।
3.	त्+ट्=त् के स्थान पर ट्	तत्+टीका=तट्टीका।
4.	त्+ल्=त् के स्थान पर ल्	उत्+लेख=उल्लेख, तत्+लीन=तल्लीन, उत्+लंघन=उल्लंघन, पत्+लव=पल्लव।
5.	त्+ड्=त् के स्थान पर ड्	उत्+डयन=उड्डयन।

4. त् के बाद ह् या श् हो तो त्, ह्, द्, ध् में तथा त्, श्, च्, छ् में बदल जाते हैं।

क्र.	नियम	उदाहरण
1.	त्+ह्=त्, ह् के स्थान पर द्,ध्	उत्+हार=उद्धार, उत्+हरण=उद्हरण, तत्+हित=तद्धित, पत्+हति=पद्धति, उत्+हृत=उद्धृत।
2.	त्+श्=त्,श् के स्थान पर च,छ	तत्+शिव=तच्छिव, उत्+शृंखल=उच्छृंखल, उत्+श्वसन=उच्छ्वसन, उत्+श्वास=उच्छ्वास, मृत् + शकटिका = मृच्छकटिका।

5. छ से पूर्व कोई स्वर तो छ का च्छ हो जाता है। जैसे—

आ + छादन = आच्छादन, स्व + छन्द = स्वच्छन्द,
अनु + छेद = अनुच्छेद, परि + छेद = परिच्छेद,
वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया, वि + छेद = विच्छेद।

6. अ, आ के अतिरिक्त किसी अन्य स्वर के पश्चात् 'स' पर स् का ष् हो जाता है। जैसे—

अभि + सेक = अभिषेक, नि + सेध = निषेध,
विशे + स = विशेष।

अपवाद—

वि + सर्ग = विसर्ग, अनु + सार = अनुसार,
वि + सर्जन = विसर्जन, वि + स्मरणीय = विस्मरणीय,
सु + स्थिर = सुस्थिर।

7. द् के बाद क्, त्, थ्, प्, स् आवें तो द्, त् में बदल जाता है। जैसे—

शरद् + काल = शरत्काल, मृद् + तिका = मृत्तिका,
विपद् + ति = विपत्ति उद् + स्थान = उत्थान
उद् + सव = उत्सव सद् + कार = सत्कार
आपद् + काल = आपत्काल उद् + तर = उत्तर
उद् + कोच = उत्कोच उद् + सर्ग = उत्सर्ग

नोट—विद्वान उत् व उद् को एक ही मानते हैं, अतः उद् के स्थान पर उत् भी स्वीकारा जा सकता है।

8. म् के बाद कोई निरनुनासिक व्यंजन हो तो 'म' अनुस्वार या वर्गीय वर्ण हो तो वह अपने पंचम वर्ण में बदलेगा। जैसे—

अलम् + कार = अलङ्कार, सम् + क्रान्ति = सङ्क्रान्ति
सम् + कलन = सङ्कलन, अहम् + कार = अहङ्कार
सम् + दिग्ध = संदिग्ध, सम् + घात् = संघात,
सम् + जीवनी = सञ्जीवनी, सम् + धि = संधि,
सम् + देह = संदेह, सम् + मान = सम्मान,

सन्धि-विच्छेद	शब्द
दम् + ड	दंड/दण्ड
खम् + ड	खंड/खण्ड
मृत्युम् + जय	मृत्युंजय/मृत्युञ्जय
चिरम् + जीवी	चिरंजीवी/चिरञ्जीवी
विश्वम् + भर	विश्वंभर/विश्वम्भर
सम् + भावना	संभावना/सम्भावना

9. सम् के बाद कृत, कृति, करण, कार, कारक आदि हों तो संधि होने पर म् अनुस्वार में बदल जाता है तथा स् का आगम हो जाता है। जैसे—

सम् + कृति = संस्कृति, सम् + कार = संस्कार,
सम् + करण = संस्करण, सम् + कृत = संस्कृत।

10. परि के बाद कृत, कृति, करण, कार, कारक आदि हों तो संधि होने पर ष् का आगम हो जाता है। जैसे—

परि + कार = परिष्कार, परि + करण = परिष्करण,
परि + कृत = परिष्कृत, परि + कृति = परिष्कृति,
परि + कारक = परिष्कारक।

11. मूर्धन्य ष के बाद यदि त्, थ्, न आवें तो ये क्रमशः ट, ठ, ण में बदल जाते हैं। जैसे—

आकृष् + त = आकृष्ट, इष् + त = इष्ट,
षष् + थ = षष्ठ, निष् + था = निष्ठा,
विष् + नु = विष्णु, कृष् + न = कृष्ण।

12. न् के पहले अथवा थोड़ी दूरी पर भी मूर्धन्य ध्वनि हो तो न का ण् हो जाता है। जैसे—

ऋ + न = ऋण, भर + अन = भरण,
पूर् + न = पूरण, राम + अयन = रामायण,
परि + नय = परिणय, परि + नाम = परिणाम,
नार + अयन = नारायण, भूष् + अन = भूषण,
शोष् + अन = शोषण, प्र + न = प्रण,
प्र + मान = प्रमाण, हर + न = हरण।

13. किसी अनुनासिक वर्ण के बाद कोई वर्गीय व्यंजन हो तो अनुनासिक वर्ण के स्थान पर वर्गीय व्यंजन के पंचम वर्ण का प्रयोग किया जाता है। जैसे—

सम् + चार = सञ्चार, सम् + न्यास = सन्न्यास,
सम् + प्रदान = सम्प्रदान, सम् + कल्प = सङ्कल्प,
भयम् + कर = भयङ्कर, शुभम् + कर = शुभङ्कर,
अलम् + करण = अलङ्करण।

नोट—इन पंचम अक्षर के स्थान पर अनुस्वार प्रयोग भी स्वीकार्य है। जैसे—संचार, संन्यास, संप्रदान, संकल्प।

समस्तपद	विग्रह	समस्तपद	विग्रह
प्रेमोपहार	प्रेम का उपहार	भूदान	भू का दान
व्यायामशाला	व्यायाम की शाला	धर्मार्थी	धर्म का अर्थी
घुड़दौड़	घोड़ों की दौड़	कनकघट	कनक का घट (पड़ा)
भारतरत्न	भारत का रत्न	यदुवंश	यदु का वंश
वनमाली	वन का माली	तरणितनुजा	तरणि की तनुजा
देवकन्या	देव की कन्या	नगरसेठ	नगर का सेठ
वनमानुष	वन का मानुष	प्रेमसागर	प्रेम का सागर
जठरानल	जठर (पेट) की (अग्नि)	देशाटन	देश का अटन (भ्रमण)
पुत्रवधू	पुत्र की वधू	युगनिर्माता	युग का निर्माता
सर्वदमन	सबका दमन करनेवाला	सिंहशावक	सिंह का शावक
हस्तलाघव	हाथ की सफाई	सन्देहास्पद	सन्देह का स्थान
अरण्यरोदन	अरण्य (जंगल) में रोदन	नरश्रेष्ठ	नरों में श्रेष्ठ
किंकर्त्तव्य विमूढ़	क्या करना चाहिए, इस विचार में अक्षम	विषयासक्त	विषयों में आसक्त
क्षत्रियाधम	क्षत्रियों में अधम	सर्वसाधारण	जो सबसे साधारण रूप से पाया जाता है
पुरुषसिंह	पुरुषों में सिंह	शास्त्रप्रवीण	शास्त्रों में प्रवीण
कविश्रेष्ठ	कवियों में श्रेष्ठ	ध्यानमग्न	ध्यान में मग्न
गृहप्रवेश	गृह में प्रवेश	सर्वोत्तम	सभी में उत्तम
रणशूर	रण में शेर	घुड़सवार	घोड़े पर सवार
रणधीर	रण में धीर	जलमग्न	जल में मग्न
कलाप्रवीण	कला में प्रवीण	जगबीती	जग पर बीती
कार्यकुशल	कार्य में कुशल	क्षणभंगुर	क्षण में नष्ट होनेवाला
पुरुषोत्तम	पुरुषों में उत्तम	रणमत्त	रण में मत्त(मतवाला)
ग्रामवास	ग्राम में वास	आत्मनिर्भर	आत्म पर निर्भर
शरणागत	शरण में आगत	मुनिश्रेष्ठ	मुनियों में श्रेष्ठ
दानवीर	दान में वीर	नीतिनिपुण	नीति में निपुण
निशाचर	निशा में चरनेवाला	आपबीती	आप पर बीती

कर्मधारय समास

नवयुवक	नव (नया) युवक	सद्भावना	सत् भावना
छुटभैये	छोटे भैये	कापुरुष	कुत्सित पुरुष
कदन्न	कुत्सित अन्न	नीलोत्पल	नीला उत्पल
महापुरुष	महान् पुरुष	सन्मार्ग	सत् मार्ग
पीताम्बर	पीत अम्बर	परमेश्वर	परम ईश्वर
सज्जन	सत् जन	महाकाव्य	महान् काव्य
वीरबाला	वीर बाला	महात्मा	महान् आत्मा
महावीर	महान वीर	नीलकमल	नीला कमल
नीलपीत	नीला-पीला	श्यामसुन्दर	श्याम जो सुन्दर है
शीतोष्ण	शीत-ऊष्ण	कहनी-अनकहनी	कहना-न-कहना
आम्रवृक्ष	आम्र जो वृक्ष है	वायसदम्पत्ति	वायस जो दम्पत्ति है
कमलनयन	कमल के समान नयन	विद्याधन	विद्या रूपी धन
देहलता	देह रूपी लता	वचनामृत	वचन रूपी अमृत
संसारसागार	संसार रूपी सागर	मुखचन्द्र	मुख रूपी रत्न
ग्रन्थरत्न	ग्रन्थ रूपी रत्न	कनकलता	कनक रूपी लता
शैलोन्नत	शैल के समान उन्नत	घनश्याम	घन-जैसे श्याम
लौहपुरुष	लोहे के समान पुरुष	चरणकमल	चरण कमल के समान

शब्द शक्ति का नाम एवं भेद	लक्षण	उदाहरण
प्रयोजनवती लक्षणा	जहाँ किसी विशेष प्रयोजन की सिद्धि के लिए लक्षणा का प्रयोग किया जाए जैसे—किसी को 'गधा', 'उल्लू' आदि कह देना उसकी मूर्खता प्रकट करने के प्रयोजनार्थ होता है।	❖ शेर शिवा ने अफजल गज को पल में किया पराजित।
गौणी–रूढ़ि लक्षणा	जहाँ मुख्यार्थ और लक्ष्यार्थ में सादृश्य सम्बन्ध हो, अर्थात् दोनों गुणों में समानता हो।	❖ चिड़ियों से मैं बाज लड़ाऊँ
शुद्धा–रूढ़ि लक्षणा	जहाँ मुख्यार्थ और लक्ष्यार्थ में कोई समानता नहीं हो अपितु उनमें सादृश्य से अलग संबंध हो।	❖ वीर पंजाब जाग उठा।
गौणी–प्रयोजनवती लक्षणा	जहाँ सादृश्य अथवा समानता के गुण के कारण लक्ष्यार्थ की प्रतीति हो। 'मेवाड़–केसरी' प्रयोग में शेर की वीरता, दृढ़ता, साहस आदि गुणों के सादृश्य से 'मेवाड़–केसरी' का अर्थ 'महाराणा प्रताप' लिया जाएगा।	❖ है करती दुःख दूर सभी उनके मुख–पंकज की सुधराई। याद नहीं रहती दुःख की, लख के उसकी मुखचन्द्र जुह्वाई।।
सारोपा	जहाँ सादृश्य सम्बन्ध प्रकट करने के लिए उपमान–उपमेय दोनों का कथन किया जाता हो। जैसे—'उद्योगी पुरुष सिंह लक्ष्मी को पाता है'	❖ ''सिंधु–सेज पर धरा–वधू अब। तनिक संकुचित बैठी सी।। प्रलय–निशा की हलचल स्मृति में। मान किये सी ऐंठी सी।।''
साध्यवसाना	सादृश्य–सम्बन्ध प्रदर्शित करने में जब उपमेय का उपमान में अध्यवसान या विलीनीकरण हो जाता है, तब साध्यवसाना गौणी लक्षणा होती है।	❖ ''हाय मेरे सामने ही प्रणय का ग्रन्थि–बन्धन हो गया, वह नव कमल। मधुप सा मेरा हृदय लेकर किसी अन्य मानस का विभूषण हो गया।।''
शुद्धा–लक्षणा	जब सादृश्य सम्बन्ध के अतिरिक्त किसी अन्य सम्बन्ध से अर्थ की प्रतीति हो तब 'शुद्धा' लक्षणा होती है।	❖ अबला जीवन हाय ! तुम्हारी यही कहानी। आँचल में है दूध और आँखों में पानी।।
उपादान लक्षणा	उपादान का अर्थ है–लेना अतः जहाँ लक्ष्यार्थ के लिए वाच्यार्थ का सम्बल लेना पड़े, वहाँ उपादान–लक्षणा होती है। वाच्यार्थ का त्याग न होने के कारण इसे **'अजहत्स्वार्था'** भी कहा जाता है।	❖ 'मैं हूँ बहन किन्तु भाई नहीं है।राखी सजी है पर कलाई नहीं है।'
लक्षण लक्षणा	जहाँ अर्थ–सिद्धि के लिए वाच्यार्थ को पूर्णरूपेण त्याग दिया जाय, केवल लक्ष्यार्थ को ही ग्रहण किया जाता है वहाँ लक्षण–लक्षणा होती है। इसमें लक्ष्यार्थ के साथ वाच्यार्थ का कोई लगाव नहीं रहता है, वाच्यार्थ का त्याग हो जाता है इसलिए इसे **'जहत्स्वार्था'** भी कहते हैं।	❖ 'पेट में चूहे दौड़ रहे हैं'। आज भुजंगों से बैठे हैं वे कञ्चन के घड़े दबाये। सहता गया, जिगर के टुकड़ों का बल पाया, हाँ पाया।
व्यंजना	शब्द के जिस व्यापार से उनके मुख्यार्थ एवं लक्ष्यार्थ से भिन्न किसी विशेष अथवा गूढ़ अर्थ का बोध होता है, उसे व्यंजना शब्द–शक्ति कहते हैं।	❖ हे अभाव की चपल बालिके, री ललाट की खल रेखा! हरी भरी सी दौड़ धूप ओ, जलमाया की चल रेखा।।
शाब्दी व्यंजना	जब व्यंग्यार्थ किसी शब्द विशेष पर आश्रित हो तो शाब्दी व्यञ्जना होती है। केवल अनेकार्थी शब्दों में ही यह शक्ति कार्य करती है।	❖ ''चिरजीवौ जोरी जुरे क्यों न सनेह गम्भीर। को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के वीर।।''

(4) **लय**—अर्थान्वितियों को ध्यान में रखकर **पदों या पदबंधों को एक प्रवाह** में पढ़ने से लय बनी रहती है। शब्दों को खण्ड करके पढ़ने पर लय में बाधा पड़ती है। पठन में लय इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि **अर्थग्रहण उसी पर निर्भर** है।

(5) **गति**—गति का प्रभाव अर्थग्रहण पर पड़ता है। पठन की दक्षता का तात्पर्य है, अर्थग्रहण की दक्षता। पठन की सुचारू गति से **कार्य की सहजता** बढ़ती है।

पठन सिखाने की विधियाँ

(1) **वर्ण विधि**—इसमें बालक को स्वर, व्यंजन, सिखाने के बाद बारहखड़ी के आधार पर मात्राओं को व्यंजनों के साथ पढ़ना सिखाया जाता है। मनोवैज्ञानिक इस विधि को **दोषपूर्ण** मानते हैं।

(2) **ध्वनि साम्य विधि**—इसमें वर्णों और शब्दों की ध्वनि पर विशेष बल दिया जाता है। **एक-सी ध्वनि वाले शब्दों** को एक साथ पढ़ाया जाता है, जिससे बालकों में रुचि बनी रहे। जैसे—आम, दाम, धाम, काम, नाम आदि। इसे भी दोषपूर्ण विधि माना गया है।

(3) **देखो और कहो विधि**—इसमें **चित्रों की सहायता से शब्दों के आधार पर** वर्णों को पढ़ना सिखाया जाता है। जैसे—कमल, कलम, कटार, कबूतर, कटोरी आदि के चित्रों को बताकर उनके नीचे लिखित शब्दों को देखकर बार-बार बोला जाता है और उसमें बालक धीरे-धीरे 'क' वर्ण को सीख जाता है।

(4) **वाक्य विधि**—इसमें पहले **वाक्य और उसके अर्थ** का बोध कराने वाले **चित्र बताकर** पूरा वाक्य पढ़ना सिखाया जाता है। बाद में वाक्य से शब्द और शब्द से वर्ण पढ़ना सिखाया जाता है।

(5) **कहानी विधि**—इसमें किसी **कहानी से सम्बद्ध चित्र** होते हैं। जिनके नीचे उससे सम्बन्धित वाक्य लिखे होते हैं। कहानी का विषय बालकों का परिचित और रुचिकर होता है। शिक्षक चित्र बताते हुए वाक्यों को बार-बार पढ़ता है, जिससे कहानी पूरी होती है। बालक भी बार-बार उन वाक्यों के अनुकरण से बोलकर उसमें आए वर्णों और शब्दों से परिचित हो जाते हैं।

(6) **मिश्रित विधि**—बालक को पढ़ना सिखाने के लिए उपयुक्त विधियों में से कोई एक या दो विधियाँ सफल नहीं हो सकती क्योंकि प्रत्येक विधि में कोई न कोई कमी होती है। अतः शिक्षक को चाहिए कि वह **सब विधियों में से जो जहाँ उपयुक्त हो,** उसे मिलाकर एक **मिश्रित विधि** के रूप में काम में लें।

(7) **नियमित वाचन**—शिक्षकों को चाहिए कि वह विद्यार्थियों को नियमित वाचन करवाएँ। यह कार्य एकदम से शुरू करने पर पहले शिक्षक को चाहिए कि वह विद्यार्थियों को वर्ण, शब्द, वाक्य के वाचन के लिए प्रोत्साहित करें। शिक्षक इसक कार्य के लिए रंगबिरंगे चित्रों, कहानियों, कविताओं आदि की सहायता से विद्यार्थी की रुचि पठन की ओर आकर्षित करें।

(8) **पुस्तकालय में पढ़ने की आदत को प्रोत्साहन**—शिक्षक बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय के पुस्तकालय में पढ़ने के लिए भेजें। पुस्तकालय में भेजन से पहले बच्चों को सही ढंग से निर्देशित करना आवश्यक है। जब बच्चे नियमित रूप से पुस्तकालय जाएंगे तो उन में आने आप ही मौन वाचन की क्षमता का विकास होगा।

(9) **अनुकरण विधि**—शिक्षक पहले कुछ बोले फिर बच्चे उसका सस्वर अनुकरण करें। यह विधि सरस्वर वाचन के कौशल के विकास में बेहद महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यदि शिक्षक का उच्चारण शुद्ध है, तो बच्चे भी शब्दों के शुद्ध उच्चारण सीख जाते हैं।

(10) **साहचर्य विधि**—इस विधि में बच्चे को किसी शब्द का अर्थ बताया जाता है फिर उस शब्द से संबंधित चित्र दिखाया जाता है। चूंकि चित्र के नीचे उसका नाम लिखा होता है इसलिए बच्चा उस चित्र और शब्द के साथ साहचर्य स्थापित कर लेता है। इस प्रक्रिया के नियमित अभ्यास से बच्चों को बहुत से शब्द सिखाए जा सकते हैं।

पठन कौशल का विकास व मूल्यांकन

- अर्थ के अवबोध पूर्वक पठन की क्षमता विकसित करना।
- विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं से चित्र सामग्री को समझने की क्षमता विकसित करना।
- चित्र पठन, शब्द पठन, शाब्दिक पठन, चिंतनात्मक पठन की क्षमता विकसित करना।
- कहानी विधि, वाक्य विधि तथा देखो व कहो विधि द्वारा मूल्यांकन सर्वोत्तम प्रकार से किया जा सकता है।

मौखिक अभिव्यक्ति

- मनुष्य जब अपने विचारों को दूसरे के समक्ष रखने के लिए भाषा का बोलकर प्रयोग करता है तो उसे **मौखिक अभिव्यक्ति** कहा गया है।
- सामान्यतः विचारों के सम्प्रेषण के लिए मौखिक अभिव्यक्ति का सहारा लिया जाता है।
- बालक के विकास की दृष्टि से मौखिक अभिव्यक्ति प्रारंभ से ही अत्यन्त आवश्यक रही है।

मौखिक अभिव्यक्ति के विकास की क्रियाएँ

(1) **अनौपचारिक बातचीत**—कक्षा में तथा कक्षा के बाहर भाषा शिक्षक तथा शिक्षार्थियों के बीच अनौपचारिक लेकिन रोचक बातचीत से छोटे बच्चों की झिझक खुल जाती है तथा उनमें आत्मविश्वास उत्पन्न हो जाता है।

(2) **कहानी कथन**—कहानी के माध्यम से शिक्षार्थियों की मौखिक अभिव्यक्ति को विकसित किया जा सकता है। भाषा शिक्षक प्राथमिक स्तर पर छोटे बच्चों को कक्षा में, कहानी एवं घटनाओं के रोचक विवरण प्रस्तुत कर सकता है।

(3) **घटना**—प्रायः छोटे बच्चों को स्वयं द्वारा देखी या सुनी हुई बातों या घटनाओं को अपने शब्दों में सुनाने में बहुत आनंद आता है। उनकी मौखिक अभिव्यक्ति के विकासार्थ माध्यमिक कक्षाओं में शिक्षार्थियों को किसी देखी हुई घटना, दृश्य, खेल-तमाशे आदि पर सुसंबद्ध ढंग से वर्णन करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

(4) **चित्र वर्णन**—छोटे-छोटे बालकों की मौखिक अभिव्यक्ति को घटना एवं कहानियों पर निर्मित चित्रों के माध्यम से विकसित किया जा सकता है। चित्र या चित्रों की शृंखला को कक्षा में प्रस्तुत कर ऐसे प्रश्न पूछे जा सकते हैं, जो 'क्यों', 'कहाँ', 'कब', 'क्या' आदि से प्रारम्भ होते हों।

(5) **आशु भाषण**—आशु भाषण भी शिक्षार्थियों में मौखिक आत्म-प्रकाशन की क्षमता विकसित करने का सशक्त माध्यम है।

(6) **वाद-विवाद**—मौखिक अभिव्यक्ति को विकसित करते समय शिक्षार्थियों में तर्कशक्ति, प्रत्युत्पन्न-मति, हाजिरजवाबी, हास्य-व्यंग्य युक्त तथा अपने विचारों को प्रभावी ढंग से संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करने जैसे गुणों का विकास होता है।

(7) **बाल सभा एवं छात्र संसद**—मौखिक अभिव्यक्ति को विकसित किए जाने का यह एक सामाजिक एवं प्रभावी कार्यक्रम है।

(8) **अभिनय**—मौखिक अभिव्यक्ति कौशल विकास हेतु शिक्षार्थियों में भावानुकूल वाणी, उचित हाव-भाव, आंगिक अभिनय एवं वाणी में

लिखना सब विद्यालय में सीख रहे होते हैं। उन्हें हिन्दी का व्यावहारिक ज्ञान उतना नहीं होता है जितना एक हिन्दी-भाषी विद्यार्थी को होता है। इसलिए शिक्षक को चाहिए कि वह उनसे भाषा लेखन का उचित अभ्यास करवाएँ। विद्यार्थी व्याकरण संबंधी त्रुटियाँ वाक्य रचना से संबंधित अज्ञानता के कारण भी करते हैं। इसलिए एक भाषा शिक्षक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह विद्यार्थियों को इस विषय में प्रशिक्षित करें।

पठन अयोग्यता के कारण (Causes of Dyslexia)

1. **बोलने में कठिनाई**—व्यक्ति उच्चारण तंत्र में व्यवधान होने के कारण शुद्ध एवं स्पष्ट नहीं बोल पाता।
2. **स्मृति का अभाव**—शुद्ध, व्याकरण सम्मत भाषा में पठन करने का बालक को अभ्यास कराया जाता है परन्तु कमजोर स्मरण शक्ति के कारण बालक को कुछ भी ध्यान नहीं रहता और वाचन में अशुद्ध अभिव्यक्ति करता है।
3. **श्रवण दोष**—बालक को सही ढंग से सुनाई न पड़ने के कारण भी पढ़ने में अशुद्धियाँ करता है। शिक्षक द्वारा किया गया आदर्श वाचन उसको ठीक ढंग से सुनाई नहीं पड़ता।
4. **व्याकरण के ज्ञान का अभाव**—अंग्रेजी माध्यम के बच्चे हिन्दी व्याकरण पर ध्यान नहीं देते इसीलिए वाचन में अशुद्धियाँ अधिक करते हैं।
5. **यति गति सम्बन्धी दोष**—बालक का अर्धविराम, पूर्ण विराम, स्वराघात एवं बलाघात पर ध्यान न होने के कारण यह समस्या आती है।
6. **अंगों के समन्वय का अभाव** (Lack of Co-ordination in organs)—बालक के मस्तिष्क का नाक, कान, आँख, हाथ-पैर से सम्बन्ध होता है। उपर्युक्त अंगों का उचित समन्वय नहीं है तो बालक ठीक ढंग से कार्य नहीं कर सकता।
7. **ध्वनियों के ज्ञान का अभाव**—बालकों को ध्वनियों का यदि ठीक ढंग से ज्ञान नहीं है तो बालक ठीक ढंग से उच्चारण नहीं कर सकता।
8. **उच्चारण के ज्ञान का अभाव**—कौनसा शब्द किस ध्वनि अंग से निकलेगा। इसके ज्ञान के अभाव के कारण वाचन ठीक ढंग से नहीं हो पाता।
9. **कम बुद्धिलब्धि**—बालक की बुद्धिलब्धि सामान्य से जितनी कम है उसी अनुपात में अयोग्यता होती है।

पठन अयोग्यता का उपचार (Remedy of Dyslexia)

पठन अयोग्यता का उपचार—पठन अयोग्यता को दूर करने हेतु विद्यालय, शिक्षक एवं अभिभावक की समन्वित भूमिका है।

1. **बालकों को वर्तनी की उपयुक्त जानकारी देना**—बालक की हिन्दी वर्तनी की पूर्ण जानकारी प्रदान की जाए। स, ष, श के अन्तर को स्पष्ट किया जाए तभी बालक शुद्ध वाचन कर सकता है।
2. **वर्णमाला क्रम की उचित जानकारी**—अधिकांश बालकों को हिन्दी वर्णमाला याद नहीं रहती है। किस वर्ग के बाद कौनसी वर्णमाला का क्रम आएगा। यह समझना आवश्यक है।
3. **उपयुक्त ढंग से पढ़ने में असमर्थ बालकों में आत्मविश्वास जगाना**—जो बालक शुद्ध वाचन नहीं कर सकते, उनमें शुद्ध बोलने हेतु प्रयास कर आत्मविश्वास जगाया जाए।
4. **गलत पढ़े गए शब्द का उचित ज्ञान**—बालक को शब्द का उचित ज्ञान कराया जाए। कई बार शब्द की व्युत्पत्ति बताने से बालक को शब्द समझ में आ जाता है और वही सही पढ़ने का प्रयास करने लगता है।
5. **छात्रों को पढ़ने में अवधान रखना**—छात्रों को ध्यान केन्द्रित कर पढ़ने की जानकारी दी जाए तो बालक सावधानीपूर्वक शब्दों का शुद्ध वाचन करेंगे।
6. **श्रवण एवं नेत्र दोषों पर ध्यान**—पढ़ने में छात्रों के नेत्रों की दृश्य क्षमता पूर्णरूपेण ठीक होनी चाहिए एवं श्रवणेन्द्रिय सही होनी चाहिए तभी वह आदर्श वाचन के अनुकूल अनुकरण वाचन कर सकता है।
7. **उच्चारण नियमों का ज्ञान**—कौनसा शब्द किस वाक्यंत्र से बोला जाएगा, इसकी समुचित जानकारी बालकों को दी जानी चाहिए।
8. **पठन कुशलता को रोचक बनाने के लिए शिक्षण सामग्री की व्यवस्था**—पठन की जाने वाली विषयवस्तु के अनुरूप पठन किया जाना चाहिए, तभी विषयवस्तु आसानी से समझ में आती है।
9. **मंदबुद्धि छात्रों पर विशेष ध्यान**—बुद्धि स्तर निम्न होना, तुतलाना आदि पठन अक्षमता के कारण हैं इनके सुधार पर विशेष ध्यान दिया जाए।
10. **ध्वनियों की जानकारी**—बच्चों की ध्वनियों की जानकारी गहनता एवं विशद ढंग से दी जानी चाहिए तभी बालक सही ढंग से पढ़ सकेगा।
11. **व्याकरण की उपयुक्त जानकारी**—हिन्दी व्याकरण की जानकारी व्याकरण की गहनता से दी जाए, तभी पठन सम्बन्धी समस्याएँ दूर हो सकेंगी।
12. **गणितीय विकलांगता (गणितीय ज्ञान का अभाव)** (Dyscalculia)—डिसकेलकुलिया 2 शब्दों से मिलकर बना Dys (डिस) तथा Calculia (केलकुलिया) Dys शब्द ग्रीक भाषा का है जिसका अर्थ है **'बुरी तरह'** Calculia शब्द लेटिन भाषा से है जिसका अर्थ है **'गणना'** Dyscalculia शब्द का अर्थ **गणितीय अज्ञानता** अथवा **गणितीय ज्ञान की जानकारी न होना** है। इसके सुधार पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

❖ **प्रो. एस.के. दुबे के अनुसार** "गणितीय विकलांगता छात्रों की उन अकुशलताओं एवं अयोग्यताओं की ओर संकेत करती है जो कि सामान्य छात्र से उन छात्रों को पृथक् करती है तथा उसका सम्बन्ध वातावरणीय एवं वंशानुगत कारणों से होता है।

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. विद्यार्थी की सीखने संबंधी कठिनाइयों को दूर करते हुए करवाये जाने वाला शिक्षण कहलाता है— [REET 2022]

(A) सूक्ष्म शिक्षण (B) ब्लॉक शिक्षण
(C) अभ्यास शिक्षण (D) उपचारात्मक शिक्षण **[D]**

2. भाषा शिक्षण के द्वारा विद्यार्थियों के भाषायी ज्ञान एवं कौशल तथा उनकी रुचियों एवं अभिवृत्तियों में कितना विकास हुआ है, इसकी सापेक्षित जानकारी प्राप्त करने हेतु कौन से दो कार्य करने होते हैं? [REET 2022]

(A) आवृत्ति-पुनरावृत्ति
(B) स्थान परिवर्तन-चिकित्सा
(C) अस्पष्टता-निवारण
(D) मापन और मापन द्वारा प्राप्त मापों की व्याख्या **[D]**

(D) अन्य दृश्य श्रव्य साधन

(1) चित्र-दर्शक—चित्र-दर्शक विभिन्न विषयों से सम्बन्धित स्लाइड्स दिखाकर उन्हें अच्छी तरह से समझाया जा सकता है। इन्हें दिखाने के लिए कक्षा में सफेदी की गई दीवार का प्रयोग किया जाता है तथा दीवार पर सफेद पर्दा लगाया जाता है। कोई भी चित्र दिखाने के बाद उसकी कुछ मौखिक व्याख्या की जाती है और प्रश्नोत्तर की सहायता से विद्यार्थियों को ज्ञान दिया जाता है। भाषा शिक्षण में प्राकृतिक दृश्यों, नदियों, पर्वतों, त्योहारों, महान व्यक्तियों आदि के विषय में बताने के लिए यह चित्र-दर्शक लाभदायक सिद्ध होता है।

(2) सबटिट्यूशनल टेबल—भाषा शिक्षा में नवीन पद्धति बहुत-से वाक्यों को तैयार करने के लिए सबटिट्यूशनल टेबल शैक्षणिक उपकरण के रूप में उपयोग में लाया जाता है। यह दृश्य साधन मात्र है। विद्यार्थी इसे टेबल को देखकर बहुत-से भिन्न अर्थ वाले वाक्यों को तैयार करते हैं। इसकी सहायता से सहजता से वाक्य तैयार करना विद्यार्थी सीख सकते हैं। एक बार सीख जाने पर व्याकरणयुक्त वाक्यों को बनाने में अपनी कुशलता दिखाते हैं।

(3) भाषा-खेल—भाषा-खेल में भाषा के खेल का बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसका उपयोग करने से विद्यार्थियों के शब्द-भण्डार में वृद्धि हो जाती है। भाषा का विशाल ज्ञान प्राप्त हो जाता है। काव्य के प्रति अभिरुचि उत्पन्न हो जाती है। विविध काव्य के प्रकारों का ज्ञान मिलता है। गद्य साहित्य के सभी उप-विभागों का ज्ञान मिलने में सहायता मिल जाती है। उदाहरण के तौर पर दूसरी कक्षा से इस पद्धति को अपना सकते हैं। कक्षा के विद्यार्थियों में दो विभाग करने चाहिए और कई स्थल, गाँव, शहर, पर्वत, नदियों आदि के नाम कहने के लिए कहें और उसी नाम की अन्त्याक्षरी से शुरुआत होने वाले स्थान का नाम दूसरे विभाग से पूछें।

(4) रिकॉर्ड प्लेयर—यह एक श्रव्य साधन है। यह साधन बहुत व्ययप्रद है, मगर भाषा (हिन्दी, अंग्रेजी) सिखाने के लिए इसका बहुत उपयोग होता है। ग्रामोफोन रिकॉर्डर (प्लेट) पर कविता और कई गद्य अनुच्छेद रिकॉर्ड किये जाते हैं। उसी प्रकार भाषा शिक्षण के वक्त कहाँ बल देना चाहिए तथा चढ़ाव-उतार और उच्चारण आदि को इस टेप में भरा जाता है। इनमें शुद्ध उच्चारण यानि भाषा तत्वों से परीक्षित उच्चारणों का समावेश होता है, उसी टेप को रिकॉर्ड प्लेयर की सहायता से कक्षा में सुनाया जाता है।

(5) भाषा प्रयोगशाला—आधुनिक भाषा शिक्षा प्रणाली में इसका शिक्षा साधन के नाम से बड़े उत्साह से प्रयोग किया जाता है। नई भाषा के स्पष्ट उच्चारणों के टेपरिकॉर्डर बनाये जाते हैं और हर विद्यार्थी को व्यक्तिशः सुनवाये जाते हैं इसे भाषा के मूलाक्षरों को लिखने के नवीनतम विविध प्रकारों को देखने के लिए रखा जाता है। विद्यार्थी उनका निरीक्षण करके आत्मीकरण कर सकते हैं। इस प्रयोगशाला में विद्यार्थियों के उच्चारणों को ठीक करते हैं।

(6) स्लाइड्स (स्थिर चित्र)—स्थिर चित्र (स्लाइड्स) एक आधुनिक दृश्य उपकरण है जिसकी सहायता से बालक अचछी तरह एकाग्र रहकर शिक्षा पाते हैं। प्रारम्भिक कक्षाओं में अक्षर-ज्ञान स्लाइड्स की सहायता से दिया जाता है। किसी कहानी तथा घटना को स्पष्ट करने वाले मूक चित्रों को बनाकर स्लाइड्स द्वारा विद्यार्थियों को पूरी कल्पना दी जाती है। इसमें विद्यार्थी स्वयं स्थिर चित्रों को देखकर कहानी तैयार करते हैं।

(7) श्यामपट्ट (Black-Board)—श्यामपट्ट परम्परागत सहायक सामग्री का अति प्राचीन साधन है। अध्यापक प्रायः निम्नांकित कार्यों के लिए श्यामपट्ट का प्रयोग करता है—

(1) रेखाचित्र, ग्राफ, मानचित्र आदि बनाने के लिए।
(2) छात्रों का ध्यान आकर्षित करने के लिए।
(3) प्रमुख तथ्यों (सूचना अंकन, तिथि ज्ञान एवं तालिका) का अभिलेख करने के लिए।
(4) छात्रों को अभ्यास कराने के लिए।
(5) उदाहरण तथा गृह कार्य देखने के लिए।
(6) श्यामपट्ट पर नियम, परिभाषा एवं सार लिखने के लिए।
(7) छात्रों की दृश्य शक्ति का उपयोग करने के लिए।

(8) ग्लोब—ग्लोब पृथ्वी का प्रतिरूप है। अतः भौगोलिक तथ्यों के स्पष्टीकरण के लिए यह बहुत ही उपयोगी है। ग्लोब का उपयोग निम्नलिखित बातों को स्पष्ट करने के लिए भी किया जाता है—

उपयोग

(1) इसकी सहायता से हम विश्व की भौतिक एकता, उसमें एक भाग का शेष भागों के साथ सम्बन्ध तथा संसार के एक भाग से दूसरे भाग की स्थिति देख और समझ सकते हैं।
(2) इसके द्वारा पृथ्वी के आकार का ज्ञान दे सकते हैं।
(3) इसके द्वारा महाद्वीपों तथा महासागरों के पारस्परिक सम्बन्धों, लम्बाई, चौड़ाई आदि का ज्ञान दिया जा सकता है।
(4) विश्व के विभिन्न जल, थल, नभ मार्गों का भी प्रदर्शन किया जा सकता है।
(5) विश्व के विभिन्न स्थानों की दूरी का ज्ञान दिया जा सकता है।
(6) पृथ्वी की गति, झुकाव, ध्रुव, अक्षांश व देशांतर तथा ऋतु परिवर्तन को भी समझाया जा सकता है।

(9) चार्ट्स (Charts)—सामाजिक पर्यावरणीय अध्ययन शिक्षण में चार्ट महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। चार्ट किसी घटना या क्रांति के क्रमिक विकास दिखाने के लिए प्रयोग में लाए जाते हैं। चार्ट के माध्यम होते हैं जिनके द्वारा किसी वस्तु का अन्तर्सम्बन्ध तथा संगठन, भावों, विचारों तथा विशेष स्थलों का दृश्यात्मक रूप में प्रदर्शित किया जा सके। शिक्षण में प्रयोग किए जाने वाले चार्ट निम्न प्रकार के होते हैं—

(अ) आनुवांशिक चार्ट—ये चार्ट विकास तथा अभिवृद्धि को प्रदर्शित करने के लिए प्रयोग में लाये जाते हैं।

(ब) धारावाहिक चार्ट—इस प्रकार के चार्टों द्वारा संगठनात्मक तत्वों के क्रियात्मक सम्बन्धों का प्रदर्शित किया जाता है।

(स) तालिका चार्ट—इन चार्टों में सामान्य अनुक्रम से जानकारी प्रस्तुत की जाती है जैसे—अस्पतालों में मरीजों को भोजन व औषधि वितरण, ऐतिहासिक चार्ट में शासकों और युद्धों की सूची कालक्रमानुसार दी जाती है।

(द) वृक्ष की आकृति वाले चार्ट—विकास या संवर्द्धन को प्रस्तुत करने के लिए ऐसे चार्ट उपर्युक्त होते हैं।

(य) आइसोटाइप चार्ट—(मुद्रण चित्र) ये चित्र आँकड़ों का चित्रात्मक

विभिन्न बहुमाध्यम एवं शिक्षण के अन्य साधन

क्र.सं.	साधन का नाम	विवरण
1.	कम्प्यूटर	कक्षा शिक्षण में सहायक सामग्री के रूप में कम्प्यूटर का उपयोग उच्चारण, श्रवण, लेखन व पठन के साथ-साथ ज्ञान के विशाल भण्डार के रूप में प्रयोग किया जाता है। इंटरनेट आदि की सुविधा से यह अनन्त ज्ञान कोष के रूप में शिक्षण सहायक सामग्री बन गया है।
2.	टेलीविजन	शैक्षिक मार्गदर्शन के क्षेत्र में टेलीविजन एक उपयोगी शिक्षण साधन है। देश-दुनियाँ की खबरें, मनोरंजन व शैक्षिक प्रसारणों को दूरस्थ कक्षाओं तक पहुँचाने में यह प्रभावकारी साधन है। टेलीविजन दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री है।
3.	सैटेलाइट प्रसारण	दूर संचार और प्रौद्योगिकी के विकास ने शैक्षिक तकनीक को बहुत समृद्धि प्रदान की है। सैटेलाइट प्रसारण के माध्यम से एक आदर्श पाठ को हजारों कक्षाओं तक आसानी से उपलब्ध कराया जा सकता है। इग्नू, एनसीईआरटी तथा अन्य दूरस्थ शिक्षा प्रदाताओं ने इस तकनीक का भरपूर इस्तेमाल किया है। 1982 से भारत में इस तकनीक का प्रयोग किया गया है।
4.	टेली कॉन्फ्रेंसिंग	विचारों के आदान-प्रदान के लिए टेली कॉन्फ्रेंसिंग एक उपयोगी माध्यम है। इसमें दूर से प्रसारित कोई कार्यक्रम इकतरफा न रहकर परस्पर संवाद से युक्त होता है। इसमें कक्षा में छात्र अपनी शंका को प्रस्तुत करके तत्काल हल प्राप्त कर सकता है।
5.	रेडियो प्रसारण	भारत में सन् 1937 से रेडियो पर शैक्षिक समाचार, विद्वानों के व्याख्यान, वार्ताएँ तथा पाठ प्रसारित कर शैक्षिक सम्बलन दिया जाता है। यह इलेक्ट्रोनिक मीडिया का सबसे सस्ता व आसानी से सुलभ साधन है।
6.	ओवर हैड प्रोजेक्टर	इस युक्ति के माध्यम से शिक्षक अपनी सामग्री, चित्र, आरेख आदि को स्लाइड के माध्यम से प्रस्तुत करता है।

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. लिंग्वाफोन (रिकॉर्ड प्लेयर) किस प्रकार की अधिगम सामग्री है? [REET 2022]
(A) प्रक्षेपक सामग्री (B) दृश्य सामग्री
(C) दृश्य-श्रव्य सामग्री (D) श्रव्य सामग्री **[D]**

2. भाषा प्रयोगशाला के अनुभाग में सम्मिलित नहीं है— [REET 2022]
(A) परामर्श कक्ष। (B) श्रवण कक्ष।
(C) नियंत्रण कक्ष। (D) विश्राम कक्ष। **[D]**

3. भाषा-शिक्षण का दृश्य-श्रव्य साधन है— [REET 2022]
(A) चित्र विस्तारक यंत्र (B) ग्रामोफोन
(C) चार्ट (D) नाटकीकरण **[D]**

4. निम्नलिखित में से भाषा पुस्तकालय का लाभ कौनसा है? [REET 2022]
(A) कक्षा शिक्षण में पूर्ति
(B) स्वाध्याय के लिए अवसर
(C) विकल्प (A) एवं (B) दोनों सही हैं।
(D) इनमें से कोई नहीं **[C]**

रही है तो उन्हें प्रेरणा मिलती है।

4. **व्यक्तिगत सहायता**—उपलब्धि परीक्षणों के द्वारा सरलता से मन्द बुद्धि, कुशाग्र बुद्धि तथा विशेष योग्यता वाले विद्यार्थियों का पता लगाकर उनकी आवश्यकताओं के अनुसार उनकी सहायता की जा सकती है।
5. **शिक्षा-निर्देशन**—इस परीक्षण के आधार पर विद्यार्थियों ने जो अंक प्राप्त किये हैं तथा उनके पूर्व के और अभी के अंकों को देखकर उन्हें समुचित निर्देशन दिया जा सकता है।
6. **विद्यार्थियों को परामर्श**—उपलब्धि परीक्षणों से हमें पता चलता है कि विद्यार्थियों की रुचियाँ क्या हैं?

❖ अनास्तासी ने परीक्षण के निम्नांकित प्रयोगों का उल्लेख किया है—

1. शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन प्रदान करने के लिये उपयोग करना।
2. विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रमों, कृत्यों तथा नियुक्तियों के लिये चयन करने में प्रयोग करना।
3. विद्यार्थी तथा अन्य व्यक्तियों की योग्यताओं का माप करना और निर्धारित निम्नतम योग्यता के साथ उनकी योग्यताओं की तुलना करना।
4. विद्यार्थियों, कर्मचारियों आदि का वर्गीकरण करने के लिये प्रयोग करना।
5. परीक्षा परिणामों के आधार पर क्रम निर्धारित करना तथा कक्षोन्नति या पदोन्नति करना।
6. परीक्षण के द्वारा पाठ्यक्रम का मूल्यांकन तथा उसकी पुनरावृत्ति भी की जाती है।
7. निदानात्मक शिक्षण प्रदान करना।
8. शिक्षण कार्य में सुधार के लिये प्रयुक्त करना।

❖ **उपलब्धि परीक्षण का निर्माण**—किसी भी लक्ष्य की पूर्ति हेतु संस्था या व्यक्ति प्रत्येक स्तर पर योजना बनाता है। सरकार द्वारा निर्मित पंचवर्षीय योजनाएँ इसका महत्त्वपूर्ण उदाहरण हो सकता है। उसी प्रकार विद्यार्थियों के मूल्यांकन हेतु परीक्षण का निर्माण किया जाता है जिसके अन्तर्गत विभिन्न पक्षों के मापन हेतु प्रश्नों को समुचित स्थान देने हेतु योजना तैयार की जाती है। शिक्षक अपनी कक्षा के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मापन तथा मूल्यांकन के लिये समय-समय पर अनेक प्रकार के परीक्षणों का प्रयोग करते हैं। परीक्षण निर्माण के आधार पर इन्हें दो भागों में बाँटा जा सकता है—

1. अप्रमापीकृत परीक्षण **2. प्रमापीकृत परीक्षण**

प्रमापीकृत परीक्षण	अप्रमापीकृत परीक्षण
• यह औपचारिक है।	• यह अनौपचारिक है।
• अधिक विश्वसनीय एवं वैध है।	• कम विश्वसनीय एवं वैध है।
• यह एक समय साध्य कार्य है।	• यह कुछ प्रश्नों की रचना करके बनाया जाता है।
• प्राप्तांकों की व्याख्या बड़े समूह में की जा सकती है।	• प्राप्तांकों की व्याख्या छोटे समूह में की जा सकती है।
• अधिक समय तथा बड़े समूह की आवश्यकता पूर्ति करता है।	• तात्कालिक आवश्यकता की पूर्ति करता है।
• कुछ विशेषज्ञों की समिति द्वारा किया जाता है।	• प्रायः कक्षा शिक्षक द्वारा किया जाता है।

❖ **उपलब्धि परीक्षण का प्रारूप**—

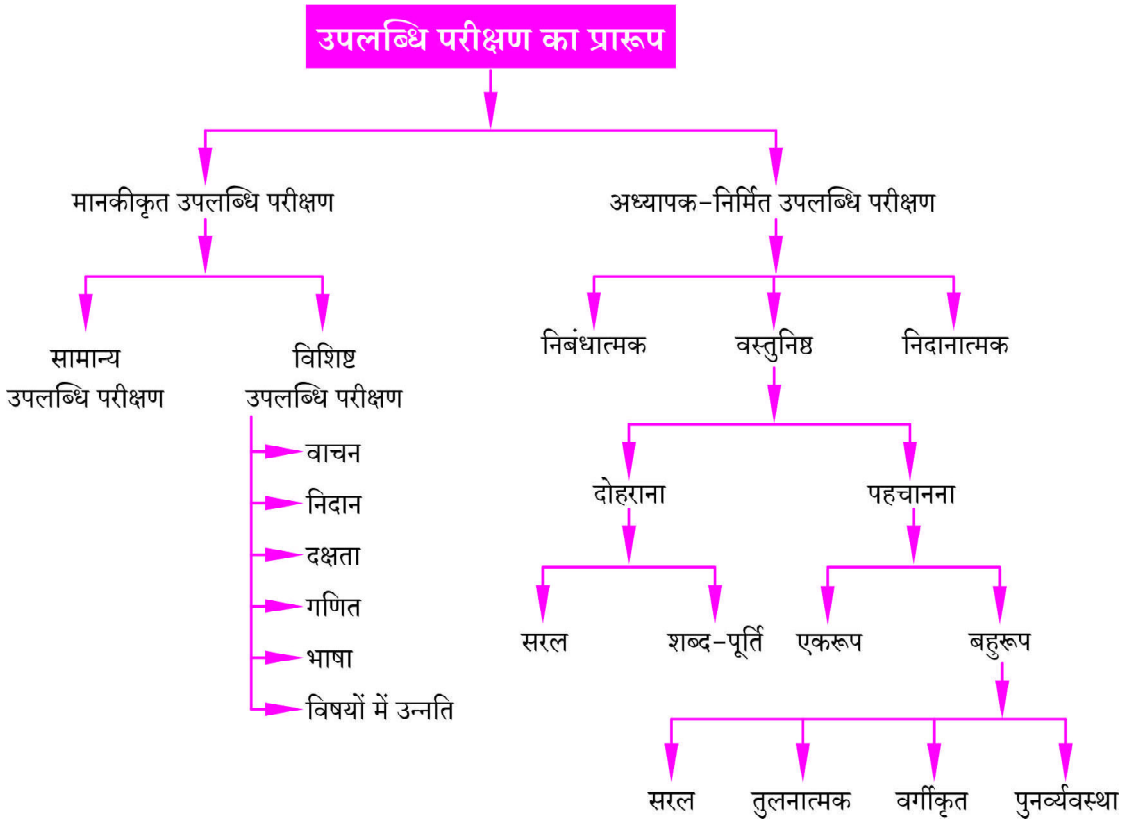

दक्ष की पुस्तकें Online Order करने के लिए www.dakshbooks.com पर जायें

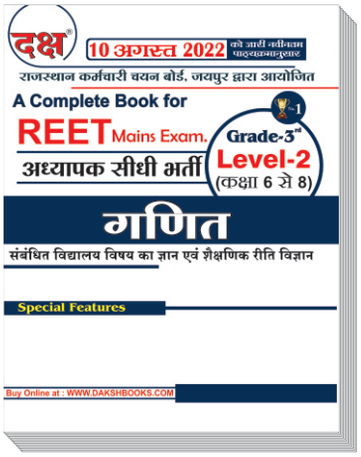

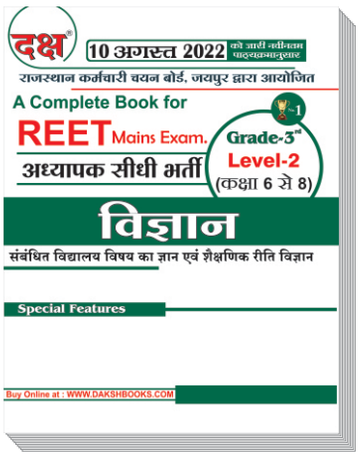

दक्ष प्रकाशन
(A Unit of College Book Centre)
A-19 सेठी कॉलोनी, जयपुर (राज.)
फोन नं. 0141-2604302
Code No. D-635 | ₹ 490/-

इस पुस्तक को ONLINE खरीदने हेतु
WWW.DAKSHBOOKS.COM
पर ORDER करें
★ SPECIAL DISCOUNT + FREE DELIVERY ★